अध्याय
4

असफलता दिखाती है नयी राह

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

वह वायुसेना में भर्ती होना चाहता था, विमान उड़ाना चाहता था, लेकिन चयन बोर्ड ने उसे उपयुक्त नहीं पाया, वही युवक जब बूढ़ा हो गया तो आवाज से भी तेज गति वाले विमान में उड़कर उसने अपना सपना पूरा किया, यह सपना भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने देखा था। एक छोटे-से कस्बे के साधारण से परिवार में जन्मे डॉ. कलाम का जीवन बड़े सपने देखने और उन्हें पूरा करने की जिद के साथ सफ लता पाने की कहानी है, 'अग्नि की उड़ान' उनकी आत्मकथा है, प्रस्तुत है इस 'उड़ान' के कुछ रोमांचक अंश!

एस.एल.वी-3 पर अभी काम चल रहा था, साथ ही इसकी उपप्रणालियों को तैयार करने का काम भी पूरा होने जा रहा था। जून 1974 कुछ जटिल प्रणालियों के परीक्षण के लिए हमने सैंटोर साउंडिंग राकेट छोड़ा, इन उपप्रणालियों में जो सम्मिश्र पदार्थ ,कंट्रोल इंजीनियरिंग और सॉफ्टवेयर प्रयोग में लाए गए थे, उनका देश में पहले कभी इस्तेमाल नहीं किया गया था। परीक्षण पूरी तरह सफल रहा। तब तक भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम साउंडिंग रॉकेटों से आगे नही बढ़ा था और यहाँ तक कि जानकार लोग भी इसकी कोशिशों को देखने-समझने और स्वीकार करने को राजी नहीं थे, पहली बार हमें राष्ट्र के विश्वास से प्रेरणा मिली थी।

सृजन के किसी भी काम की तरह एस.एल.वी.-3 को तैयार करने का काम भी कष्टसाध्य प्रक्रिया थी। एक दिन जब मेरी टीम और मैं पहले चरण की मोटर के परीक्षण के काम में पूरी तरह तल्लीन थे, तभी रामेश्वरम् से खबर आई कि मेरे बहनोई और मुझे रास्ता दिखानेवाले जनाब अहमद जलालुद्दीन अब इस दुनिया से चले गए थे, यह खबर सुनकर कुछ मिनटों के लिए जैसे मैं थम-सा गया, कुछ सोच भी नहीं पाया, न ही कुछ महसूस कर रहा था, जब मैंने एक बार और काम में ध्यान लगाने की कोशिश की तो मैंने पाया कि मैं अपने आपमें ही कुछ बहकी-बहकी बातें कर रहा हूँ। तब मुझे महसूस हुआ कि जलालुद्दीन के साथ मेरा भी एक हिस्सा चला गया है।

जैसे मेरे सामने बचपन की यादें उभर आई। शाम को रामेश्वरम् मंदिर के आसपास घूमना,चाँदनी रात में चमकती मिट्टी और नृत्य करती समुद्री लहरें ,अनंत आकाश से टिमटिमाते तारों का प्रकाश,मुझे समुद्र में डूबता क्षितिज दिखाते जलालुद्दीन, मेरी किताबों के लिए उनके द्वारा पैसों का बंदोबस्त करना और सांताक्रूज हवाई अड्डे पर मुझे विदा करने आना, मुझे लगा जैसे कि मैं समय और काल के भंवर में फेंक दिया गया। मेरे पिता , जो अब अपने जीवन के सौ साल से भी ज्यादा पार कर चुके थे तथा जिन्हें अपने से आधी उम्र के अपने ही दामाद का जनाजा उठाना था, मेरी बहन जोहरा की कलपती आत्मा,जिसके चार साल के बेटे के चले जाने से लगे घाव अभी भरे भी नहीं थे-ये सारे दृश्य आँसुओं से धुंधलाई मेरी आँखों के सामने तैर रहे थे और मुझे खौफनाक महसूस हो रहे थें। मैने अपने को शांत किया और परियोजना के उप निदेशक डॉ. एस.श्रीनिवास को अपनी गैरहाजिरी में काम देख लेने के बारे में कुछ निर्देश दिये।

बसें बदलता हुआ रात भर का सफर तय करके अगले दिन सुबह ही मैं रामेश्वरम् पहुँच पाया, मेरे पिताजी बहुत देर तक मेरा हाथ थामे रहे, उनकी आँखों में भी आँसू नहीं थे। क्या तुम नही देखते ,अबुल ,ईश्वर किस प्रकार अंधेरा कर देता है? क्या यही उसकी इच्छा थी? लेकिन उसने रास्ता दिखाने के लिए ही सूरज बनाया है, यही है वह जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई और आराम के लिए नींद दी। जलालुद्दीन अब गहरी नींद मे सो चुके हैं- एक स्वप्नरहित नींद में, पूरी तरह शांति में, जिसमें साधारण रूप से अचेतन है, अल्लाह की नियति के आगे हम कुछ नहीं कर सकते, वही हमारा रखवाला है, मेरे बेटे अल्लाह पर अपना भरोसा रखो। उन्होंने अपनी झुर्रीदार पलकों को धीरे से बंद किया और ध्यानमग्न हो गए।

मुझे मौत से कभी डर नहीं लगा। आखिरकार एक दिन तो सभी को जाना है। शायद जलालुद्दीन कुछ जल्दी चले गए, बहुत ही जल्दी। मैं खुद ज्यादा समय तक घर पर रुक नहीं सका। मुझे लग रहा था कि मैं एक अजीब-सी अशांति एवं चिंता में डूबता जा रहा हूँ और मेरे व्यक्तिगत जीवन तथा पेशेवर जीवन के बीच अंदरूनी विरोधाभास जन्म लेते जा रहे हैं। थुंबा लौटने के कई दिन बाद तक मुझे अपने लिए हर काम को लेकर एक ऐसी निरर्थकता का आभास होता रहा। एक वैराग्य जैसा अनुभव जो पहले कभी नहीं हुआ था।

जब भी मुझे पिताजी की तबीयत खराब होने के बारे में पता लगता तो मैं शहर के एक अच्छे डॉक्टर को लेकर रामेश्वरम् चला जाता। जब-जब मैं ऐसा करता तब पिताजी अनावश्यक चिंता करने के लिए मुझ पर नाराज होते और डॉक्टर पर किए जाने वाले खर्च को लेकर भी मुझे सुना देते, वह कहा करते 'मेरे ठीक होने के लिए तुम्हारा आ जाना ही पर्याप्त है, तुम डॉक्टर को लाकर उसकी फीस पर पैसा क्यों खर्च करते हो?' इस समय तक उनका स्वास्थ्य इतना गिर चुका था कि डॉक्टर, देखभाल या पैसे से भी कुछ नहीं हो सकता था, मेरे पिताजी जैनुल आबदीन रामेश्वरम् की भूमि पर एक सौ दो वर्ष तक रहे सन् 1976 में इनका इंतकाल हो गया।

पिताजी मुझे हमेशा अबूबेन आदम की एक पौराणिक कथा सुनाया करते थे। एक रात अबू एक सपना देखकर जाग जाता है। सपने में वह देखता है कि एक फरिश्ता सोने की किताब में उन लोगों के नाम लिख रहा है जो ईश्वर से प्यार करते हैं। अबू उस फरिश्ते से पूछता है कि क्या खुद उसका नाम भी इस सूची में है। इस पर फरिश्ता नकारात्मक उत्तर देता है। तब निराश मगर खुशी से अबू कहता है मेरा नाम उनमे लिख दो जो उसके अनुयायियों से प्रेम करते है, फरिश्ते ने नाम लिख दिया और गायब हो गया, अगली रात फिर फरिश्ता आया और उन लोगों के नाम दिखाए जिन्हें ईश्वर के प्रेम से आशीर्वाद मिला था। इसमें अबू का नाम सबसे ऊपर था।

मैं अपनी माँ के पास बहुत देर तक बैठा रहा, लेकिन कुछ बोल नहीं पाया। जब मै थुंबा लौटने के लिए उनसे विदा लेने लगा, उन्होने भर्राई हुई आवाज में मेरे लिए दुआ की और आशीर्वाद दिया। उन्हें यह मालूम था कि उन्हें अपने पति का वह घर छोड़ना नहीं था और मैं उनके साथ वहाँ रह नहीं सकता था। हम दोनों को अपनी जगह ही रहना था। यही नियति थी,यही प्रारब्ध था।

एस.एल.वी.-3 एपी जी रॉकेट के ऊपरी हिस्से का विकास डायामांट की तरह ही तैयार किया गया था, इसका उड़ान परीक्षण फ्रांस में होना था। इसमें कई जटिल समस्याएँ आ गई थीं। इन समस्याओं को दूर करने के लिए मुझे तत्काल फ्रांस जाना था, दोपहर बाद फ्रांस के लिए मैं रवाना होता, उससे पहले ही मुझे खबर मिली कि मेरी माँ का निधन हो गया है , नागरकोइल जाने के लिए मुझे सबसे पहले जो बस मिल सकती थी, पकड़ी। वहाँ से रात ट्रेन का सफर करके मैं अगले दिन सुबह रामेश्वरम् पहुँचा। वे दोनों आत्माएँ, जिन्होंनें मुझे स्वरूप देने के लिए आकार लिया था, मुक्त हो चुकी थीं, उनकी यात्रा का अंत समय आ चुका था। हममें से बाकी को यह सफर जारी रखना था और जीवन का खेल पूरा होने देना था। मैने उस मस्जिद में प्रार्थना की जिसमें मेरे पिताजी मुझे हर शाम एक बार जरूर ले जाया करते थे मैने कहा-मेरी माँ अब अपने पति की देखरेख एवं प्यार के बिना इस दुनिया में और ज्यादा नहीं रह पाई और इसलिए अब उन्होंने अपने पति के पास ही चले जाना बेहतर समझा। मैंने उससे (ईश्वर) क्षमा माँगी, ''जो जिम्मेदारीमैंने उन्हें दी और जैसा जीवन मैंने उनके लिए तैयार किया था,उसे उन्होंने बड़ी सावधानी,समर्पण एवं ईमानदारी के साथ पूरा किया और वापस मेरे पास आए तुम उनका काम पूरा होने के दिन शोक क्यों मना रहे हो? उस काम पर ध्यान केंद्रित करो जो तुम्हारे लिए पड़ा है । अपने कार्यों से परमानंद को प्राप्त करो,'' ये शब्द किसी ने कहे नहीं थे, लेकिन मैंने जोर से व स्पष्ट आवाज में सुना था। तब मैं बहुत ही शांति के साथ मस्जिद से बाहर आया और बिना अपने घर की तरफ देखे रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़ा।

अगली सुबह मै थुंबा लौट आया था- बहुत थका हुआ और भावनात्मक रूप से बहुत टूटा हुआ लेकिन अपने महत्त्वाकांक्षी कार्य, यानी भारतीय रॉकेट के एक भाग को विदेशी भूमि से उड़ाने के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध।

एस.एल.वी–3 एपीजे रॉकेट के सफल परीक्षण के बाद फ्रांस से लौटने पर एक दिन डॉ. ब्रह्मप्रकाश ने मुझे वर्नहर फॉन ब्रॉन के पहुँचने के बारे में सूचना दी। रॉकेट विज्ञान के क्षेत्र में काम करने वाला हर व्यक्ति फॉन ब्रॉन के बारे में जानता है, जब डॉ. ब्रह्मप्रकाश ने मुझसे फॉन ब्रॉन को मद्रास(अब चेन्नई) में स्वागत करने और मद्रास से उन्हे थुंबा लाने को कहा तो स्वाभाविक था, मैं रोमांचित हो उठा। मद्रास से त्रिवेंद्रम हम एयरो एयरक्राफ्ट में गए, इस यात्रा में करीब नब्बे मिनट का समय लगा। फॉन ब्रॉन ने मुझसे हमारे काम के बारे में पूछा और इस तरह सुना जैसे वे कोई रॉकेट विज्ञान के छात्र हों। मुझे कभी भी यह उम्मीद नहीं थी कि आधुनिक रॉकेट विज्ञान के जन्मदाता इतने विनम्र, ग्रहणशील एवं प्रोत्साहन देनेवाले होंगे। पूरी उड़ान के दौरान मुझे उनका साथ बहुत ही अच्छा महसूस हुआ यह कल्पना कर पाना कठिन था कि मैं मिसाइलों के इतने बड़े ज्ञाता से बात कर रहा हूँ, क्योंकि वह एक अनात्मशंसी व्यक्ति थे। अपने कार्य जीवन का एक बड़ा हिस्सा जर्मनी में बिताने के बाद अब आप अमेरिका में कैसा महसूस करते हैं? यह सवाल मैंने ब्रॉन से पूछा, जो अपोलो मिशन में 'शनि' रॉकेट तैयार करने के बाद अमेरिका में एक पूजनीय हस्ती बन गए थे अपोलो मिशन के इस रॉकेट ने ही मनुष्य को चाँद पर उतारा था, 'अमेरिका एक विशाल संभावनाओं वाला देश है, लेकिन वे हर चीज को गैर अमेरिकीपन संदेह एवं अपमान की दृष्टि से देखते हैं' वे विदेशी तकनीकियों को बहुत ही तुच्छ समझते हैं, अगर तुम रॉकेट विज्ञान में कुछ भी करना चाहते हो , इसे अपने आप करो। ब्रॉन ने मुझे सलाह दी। उन्होंने टिप्पणी करते हुए कहा 'एस.एल.वी.–3 एक विशुद्ध भारतीय डिजाइन है और आपके सामने अपनी समस्याएँ ही आ सकती है। लेकिन तुम्हे यह हमेशा याद रखना चाहिए कि हम सिर्फ सफलताओं से ही नहीं बनते हैं, हमारा निर्माण असफलताओं से भी होता है, कठोर परिश्रम और इसके लिए प्रतिबद्धता के विषय पर बातचीत के विषय में ब्रॉन मुस्कराए और बोले, रॉकेट विज्ञान में कठोर परिश्रम ही पर्याप्त नहीं है। यह कोई खेल नहीं है, जिसमे थोड़ी–सी मेहनत से ही तुम्हें सम्मान मिल सकता है। यहाँ न सिर्फ तुम्हें लक्ष्य को पाना है बल्कि इसे जितना जल्दी संभव हो सके,हासिल करने के तरीके भी निकालने हैं। संपूर्ण प्रतिबद्धता का अर्थ केवल कड़ी मेहनत नहीं है। इसमें पूर्णरूप से शामिल होने का पक्ष बहुत महत्त्वपूर्ण है, तुम रॉकेट विज्ञान को अपना पेशा, अपनी जीविका मत बनाओ। इसे अपना धर्म समझो, अपना मिशन बनाओ। फॉन ब्रॉन में क्या मैंने प्रो.विक्रम साराभाई को देखा? यह सोचकर मुझे बहुत प्रसन्नता होती है कि मुझे ऐसा लगा।

तीन साल लगातार परिवार में तीन मौतें हो जाने के कारण मुझे अपने काम के प्रति पहले से भी ज्यादा प्रतिबद्धता की जरूरत थी। मैंने अपना सब कुछ तलाश लिया है जिस पर मुझे आगे बढ़ना है। मेरे लिए एस.एल.वी ईश्वर का मिशन और उसकी प्रगति मेरा उद्देश्य बन गया। इस दौरान मैंने अपनी सब दूसरी गतिविधियाँ ,जो थोड़ी–बहुत हुआ करती थीं, भी रोक दीं, अब न मैं शाम को बैडमिंटन खेलता। न ही साप्ताहिक या दूसरी छुट्टियाँ करता,न परिवार, न रिश्तेदारी और यहाँ तक कि दोस्तों के यहाँ भी आना जाना छूट गया।

अपने मिशन में सफल होने के लिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्रचित्त होकर समर्पित होना चाहिए। मेरे जैसे लोग प्राय: 'कार्याधिक्य' से ग्रस्त कहे जाते हैं, लेकिन मुझे इस पर आपत्ति है , क्योंकि यह एक प्रकार की रोगात्मक स्थिति अथवा बीमारी का सूचक है, जबकि वचनबद्धता, एकाग्रचित्त लक्ष्य प्राप्त करने के साधन हैं। यदि मैं वह करता हूँ जिसके लिए मेरी इच्छा दुनिया में कुछ भी होने से ज्यादा करने की है और जो मुझे खुशी प्रदान करती है।

जो लोग अपने पेशे में शीर्ष पर पहुँचना चाहते हैं, उनके भीतर पूर्ण वचनबद्धता का मूलभूत गुण होना बहुत जरूरी है, पूरी क्षमता के साथ काम करने की इच्छा के बाद मुश्किल से ही कोई और इच्छा जन्म ले पाती है। मेरे साथ जो लोग थे, उन्हें प्रति हफ्ते चालीस घंटे काम करने का पैसा मिलता था। मैं ऐसे लोगों को भी जानता हूँ जो हर हफ्ते साठ, अस्सी और यहाँ तक कि सौ घंटे तक काम करते थे। क्योंकि उन्हें अपना काम रोमांच पैदा करने वाला,चुनौती भरा एवं अच्छा प्रतिफल देनेवाला लगता था। सभी सफल पुरुषों व महिलाओं में पूर्ण वचनबद्धता का गुण जरूर पाया जाता है।

जब आप एक बार ऐसा कर चुके हों, अपने कार्य के प्रति अपने को वचनबद्ध बना चुके हों और ऊर्जावान हो चुके हों, तब आपको अच्छे स्वास्थ्य और अपार ऊर्जा की भी आवश्यकता होगी। शीर्ष पर पहुँचने के लिए दृढ़ इच्छा–शक्ति जरूरी होती है, चाहे वह माउंट एवरेस्ट हो या आपके कार्यक्षेत्र का शीर्ष । हर व्यक्ति अलग–अलग ऊर्जा लेकर

जनमा है और जो सबसे पहले प्रयास करेगा और अपनी ऊर्जा का इस्तेमाल करेगा,वही सबसे जल्दी अपने जीवन को सुव्यवस्थित कर पाएगा।

सन् 1979 में छह सदस्यों की एक टीम दूसरे चरण की जटिल नियंत्रण प्रणाली का उड़ान रूपांतर तैयार करने में लगी थी। इस प्रणाली का स्थैतिकी परीक्षण व मूल्यांकन किया जाना था। परीक्षण के पंद्रह मिनट पहले प्रणाली की उल्टी गिनती पर टीम की नजर लगी हुई थी। प्रणाली के बारह वाल्वों में से एक वाल्व जाँच के दौरान सही नहीं पाया गया। इससे चिंतित होकर टीम के सदस्य वाल्व में आई गड़बड़ी देखने परीक्षण स्थल पर गए। तभी अचानक लाल धुएँवाले नाइट्रिक एसिड (आर.एफ.एन.ए.) का टैंक फट गया और नाइट्रिक एसिड टीम के सदस्यों पर जा गिरा। टीम के सदस्य गंभीर रूप से जल गए,घायल साथियों को इस हालत में देखना एक जबरदस्त आघात लगने जैसा अनुभव था। कुरूप एवं मैं तुरंत ही त्रिवेंद्रम मेडिकल कॉलेज अस्पताल गए और अपने जख्मी साथियों को भरती कर लेने का अनुरोध किया। उस वक्त अस्पताल में छह बिस्तर तक खाली नहीं थे।

इन छह घायल साथियों में एक शिवरामकृष्णन् नायर भी थे। उनके शरीर पर कई जगह एसिड गिरा था। जैसे-तैसे हमें अस्पताल में एक बिस्तर उपलब्ध हो गया। शिवरामकृष्णन् दर्द से कराह रहे थे। मैं उनके सिरहाने बैठा रहा। तड़के तीन बजे करीब शिवरामकृष्णन् होश में आए। होश में आने के बाद पहला शब्द ही उन्होंने इस दुर्घटना पर अफ-सोस जाहिर करने के लिए बोला और मुझे इस बात के लिए आश्वस्त किया कि दुर्घटना के कारण परीक्षण कार्यक्रम में जो देरी हो गई है। उसे वे जल्दी ही ठीक कर देगें। इस गंभीर हालत में भी काम के प्रति उनकी जो चिंता व विश्वास था, वह मुझे भीतर तक छू गया।

इस घटना से मुझमें टीम के लोगों के प्रति एक बड़ा विश्वास पैदा हो गया था, एक ऐसी टीम जो सफलता व असफलता में एक चट्टान की भाँति खड़ी रह सकती है।

मैंने एक शब्द 'प्रवाह' का प्रयोग, बिना इसके अर्थ की व्याख्या किए, कई जगह किया है। आखिर यह प्रवाह है क्या? यह आनंद क्या है? मैं उन्हें जादुई क्षण कह सकता हूँ। मैं क्षणों एवं उत्तमता के बीच एक ऐसी अनुरूपता देखता हूँ, जिसे आप बैडमिंटन खेलते वक्त या जॉगिंग करते वक्त महसूस करते है। प्रवाह एक ऐसी अनुभूति है जिसका हमें उस समय अनुभव होता हैं जब हम अपने काम में पूरी तरह मशगूल होते हैं। प्रवाह के दौरान काम आंतरिक प्रेरणा से ही होता चला जाता हैं।, जिसमें काम करने वाले की चेतना का दखल जरूरी नहीं होता। कोई जल्दी नहीं होती हैं। घबराहट पैदा करने वाली कोई माँगे नहीं होती हैं। भूत व भविष्य गायब हो जाता है,स्वयं एवं कार्य के बीच का फर्क मिट जाता है। हम सभी एस.एल.वी. के प्रवाह में थे, तभी तो काफी कठोर परिश्रम करते हुए भी हम काफी आराम में, ऊर्जावान एवं तरोताजा थे, यह कैसे हो पाया? किसने इस प्रवाह को बनाया?

जब एस.एल.वी.-3 का ठोस आकार सामने आने लगा, तभी एकाग्रता एवं योग्यता भी सुस्पष्ट रूप से बढ़ती गई, मैं पूरे विश्वास से एस.एल.वी.-3 की परियोजना को सफल होते देख सकता था। कई बार मैं और मेरी टीम के सदस्य काम में इस कदर लगे रहते थे कि हम दोपहर का खाना ही नहीं खा पाते और न ही हमें लगता कि हम भूखे है।

ऐसे कई अवसरों का विश्लेषण करने पर मैंने पाया कि जब परियोजना का काम पूरा होने के करीब था तब यह प्रवाह बना हुआ था या फिर परियोजना उस चरण में पहुँच गई थी। जब हमारे पास पूरे आँकड़े इकट्ठे हो गए थे और हम समस्याओं का हल निकालने की तैयारी शुरू करने वाले थे। मैंने यह भी महसूस किया कि ऐसा उन दिनों हुआ जब दफ्तर में अपेक्षित शांति रही, कोई बैठकें या चिल्लाने का माहौल नहीं रहा। इस तरह की स्थितियाँ धीरे-धीरे बनती गईं और सन् 1979 के मध्य में एस.एल.वी.का सपना पूरा हुआ।

एस.एल.वी.-3 का पहला प्रायोगिक उड़ान परीक्षण हमने 10 अगस्त, 1979 को निर्धारित किया था। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य श्रीहरिकोटा प्रक्षेपण केन्द्र में पूर्णरूप से समेकित प्रक्षेपण यान विकसित करना था तथा उड़ान प्रणालियों जैसे स्टेज मोटर्स, निर्देशन व नियंत्रण प्रणाली और इलेक्ट्रानिक प्रणाली को जाँचना था साथ ही नई प्रणालियों -जैसे चैकआउट, ट्रैकिंग, टेलीमीटरी एवं आंकड़ों संबंधी सुविधाएँ भी इस केन्द्र में विकसित करनी थीं। इस

प्रकार तेईस मीटर लंबा, चार चरणों वाला एस.एल.वी. रॉकेट सुबह सात बजकर अट्ठावन मिनट पर छोड़ा गया इसका वजन सत्रह टन था। प्रक्षेपण के फौरन बाद ही इनकी प्रणालियों ने अपने काम शुरू कर दिए।

पहले चरण में पूर्ण सफलता से अपना काम किया। इस चरण को दूसरे चरण में परिवर्तित होना था, हम एल.एल.वी-3 को उड़ता हुआ देखने की उम्मीदें लिए हुए थे, लेकिन अचानक ही एक गड़बड़ी आ गई और उम्मीदों को धक्का लगा, रॉकेट का दूसरा चरण नियंत्रण से बाहर हो गया 317 सेकंड के बाद ही उड़ान बंद हो गयी और चौथे चरण सहित पूरा यान श्रीहरिकोटा से पाँच सौ साठ किलो मीटर दूर समुद्र में आ गिरा ।

इस घटना से हम सबको गहरा धक्का लगा, मुझे नाराजगी और निराशा दोनों हुई अचानक ही मुझे महसूस हुआ कि मेरे पैर इस कदर थम गए हैं कि उनमें दर्द हो रहा है, यह समस्या मेरे शरीर में नहीं थी बल्कि मेरे मस्तिष्क में कुछ घटित हो रहा था।

आपको इसका क्या कारण लगता है? किसी ने मुझसे ब्लॉक हाउस में यह पूछा मैंने इसका जवाब ढूँढ़ने की कोशिश की लेकिन मैं काफी थका हुआ भी था, मैंने निरर्थक समझते हुए इसका कारण ढूँढ़ने की कोशिश छोड़ दी। प्रक्षेपण सुबह ही हुआ था, पूरी रात उलटी गिनती चली थी। पिछले एक हफ्ते से मुश्किल से ही थोड़ा सो पाया था। मानसिक व शारीरिक रूप थका हुआ मैं अपने कमरे में गया और बिस्तर पर कटे पेड़-सा जा गिरा। मेरे कंधे पर हाथ रखकर किसी ने मुझे जगाया। दोपहर खत्म हो चुकी थी और शाम होने जा रही थी। मैंने देखा डॉ. ब्रह्मप्रकाश मेरे पास बैठे हुए हैं 'खाने का क्या हो रहा है?' उन्होंने पूछा। उनका यह स्नेह व चिन्ता मुझे गहराई तक छू गई। मुझे बाद में पता चला कि इससे पहले भी दो बार डॉ. ब्रह्मप्रकाश मेरे कमरे में आये थे लेकिन मुझे सोता देखकर लौट गए थे। वह पूरे समय यह प्रतीक्षा करते रहे कि मैं उठ जाऊँ और फिर उनके साथ दोपहर का भोजन करूँ। मैं उदास तो था लेकिन अकेलापन नहीं लग रहा था। डॉ. ब्रह्मप्रकाश के साथ ने मेरे भीतर एक नया विश्वास जगाया।

ऐसा ही विश्वास नई सफलताओं के क्षितिज तक पहुँचाता है।

अभ्यास

1. डॉ. कलाम बचपन में कौन सी पौराणिक कहानी सुना करते थे? उसका उन पर क्या प्रभाव पड़ा?
2. परिवार में लगातार होने वाली मौतों के बाद डॉ. कलाम की दिनचर्या में क्या परिवर्तन हुआ?
3. रामेश्वरम् मंदिर के पास डॉ. कलाम संध्या का समय किस प्रकार व्यतीत करते थे?
4. एस.एल.वी.-3 की तैयारी मे डॉ. कलाम किस प्रकार व्यस्त रहते थे?
5. जो व्यक्ति शीर्ष पर पहुँचना चाहते हैं, उनमें कौन-कौन से गुण होने चाहिए। इसे डॉ. कलाम के जीवन के आधार पर समझाइए।
6. डॉ. कलाम का जीवन संघर्षो के मध्य उभरती प्रतिभा की कहानी है। उदाहरण देते हुए समझाइए।

योग्यता विस्तार

1. डॉ. कलाम जैसे प्रसिद्ध वैज्ञानिक से यदि आपकी भेंट हो जाए, तो आप उनसे क्या-क्या प्रश्न पूछेंगे अपनी प्रश्नावली की सूची बनाइए।
2. आपके जीवन का क्या उद्देश्य है? इस संबंध में अपनी कार्य योजना लिखिए।
3. ऐसे प्रेरणादायी महान व्यक्तियों के प्रेरक प्रसंगों का संकलन कीजिए जिन्होंने विषम परिस्थितियों से जूझते हुए सफलता का इतिहास रचा।

***